सबका मालिक कुदरत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सांई बाबा कहा करते थे सबका मालिक एक है। वह एक ही कुदरत है। इसलिए कहा जा सकता है कि सबका मालिक कुदरत। कुदरत ईश्वर, प्रकृति और सृष्टि है। यह सृष्टि रंगमंच है। रामलीला के पात्र मंच पर आकर के अपना अभिनय करके चले जाते हैं। वैसे ही इस संसार में प्राणी अपने कर्मों के अनुसार इस संसार में आते–जाते रहते हैं। कुदरत जड़ और चेतन दो तत्वों से बनी है। जड़ तत्व विनाशशील है। जड़ स्वयं चलता नहीं इसे चलाने के लिए चेतन की आवश्यकता पड़ती है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय प्राणियों तक सभी चेतन तत्व हैं। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन। जब तक दोनों का संयोग रहता है तब तक शरीर चलता रहता है। आत्मा के शरीर से अलग होने के बाद जड़ जड़ में मिल जाता है।

ब्रह्मा से लेकर तिनके तक सब छोटे–बड़े, चर–अचर जीवों को भगवान ने ही अपने वश में कर रखा है। न केवल मेरे और आपके, बल्कि संसार के समस्त बलवानों के बल भी केवल वही हैं। वे ही महापराक्रमी सर्वशक्तिमान प्रभु काल है। तथा समस्त प्राणियों के इन्द्रियबल, मनोबल, देहबल, धैर्य एवं इन्द्रिय भी वही हैं। वही परमेश्वर अपनी शक्तियों के द्वारा इस विश्व की रचना, रक्षा और संहार करते हैं। वे ही तीनों गुणों के स्वामी हैं। आप अपना यह आसुर भाव छोड़ दीजिये। अपने मन को सबके प्रति समान बनाइये।

इस संसार में अपने वश में न रहने वाले कुमार्गगामी मन के अतिरिक्त और कोई शत्रु नहीं है। मन में सबके प्रति समता का भाव लाना ही भगवान की सबसे बड़ी पूजा है। जो लोग अपना सर्वस्व लूटने वाले इन छः इन्द्रियरूपी डाकुओं पर तो पहले विजय नहीं प्राप्त करते और ऐसा मानने लगते हैं कि इमने दसों दिशाएं जीत लीं, वे मूर्ख हैं। जिस ज्ञानी एवं जितेन्द्रिय महात्मा ने समस्त प्राणियों के प्रति समता का भाव प्राप्त कर लिया, उसके अज्ञान से पैदा होने वाले काम–क्रोधादि शत्रु भी मर मिट जाते हैं, फिर बाहर के शत्रु तो रहें ही कैसे?

हिरण्यकशिपु अपने को भगवान मानता था किन्तु वह महापापी और अज्ञानी था। उसने अपने पुत्र प्रह्लाद को कुमार्ग पर लाने का प्रयास किया। किन्तु प्रह्लाद भगवत् भक्त थे। हिरण्यकशिपु ने भक्त प्रह्लाद से कहा तेरे बहकने की भी अब हद हो गयी है। यह बात स्पष्ट है कि अब तू मरना चाहता है। क्योंकि जो मरना चाहते हैं, वे ही ऐसी बेसिर पैर की बातें बका करते हैं। अभागे! तूने मेरे सिवा जो और किसी को जगत का स्वामी बतलाया है, सो देखूं तो तेरा वह जगदीश्वर कहां है? अच्छा, क्या कहा, वह सर्वत्र है? तो इस खंभे में क्यों नहीं दिखता? अच्छा, तुझे इस खंभे में भी दिखायी देता है! अरे तू क्यों इतनी डींग हांक रहा है? मैं अभी–अभी तेरा सिर धड़ से अलग किये देता हूं। देखता हूं तेरा वह सर्वस्व हरि, जिस पर तुझे इतना भरोसा है, तेरी कैसे रक्षा करता है? इस प्रकार वह अत्यन्त बलवान महादैत्य भगवान के परम प्रेमी प्रह्लाद को बार–बार झिड़कियां देता और सताता रहा।

जब क्रोध के मारे वह अपने को रोक न सका, तब हाथ में खड्ग लेकर सिंहासन से कूद पड़ा और बड़े जोर से उस खंभे को एक घूंसा मारा। उसी समय उस खंभे में एक बड़ा भंयकर शब्द हुआ। ऐसा जान पड़ा मानो यह ब्रह्माण्ड ही फट गया हो। वह ध्वनि जब लोकपालों के लोक में पहुंची, तब उसे सुनकर ब्रह्मादि को ऐसा जान पड़ा, मानों उनके लोकों का प्रलय हो रहा हो। हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को मार डालने के लिये बड़े जोर से झपटा था, परन्तु दैत्य सेनापतियों को भी भय से कंपा देने वाले उस अद्भुत और अपूर्व घोर शब्द को सुनकर वह घबराया हुआ सा देखने लगा कि यह शब्द करने वाला कौन है? परन्तु उसे सभा के भीतर कुछ भी दिखायी न पड़ा।

इसी समय अपने सेवक प्रह्लाद और ब्रह्मा की वाणी सत्य करने और समस्त पदार्थों में अपनी व्यापकता दिखाने के लिये सभा के भीतर उसी खंभे में बड़ा ही विचित्र रूप धारण करके भगवान प्रकट हुए। वह रूप न तो पूरा–पूरा सिंह का ही था और न मनुष्य का ही। जिस समय हिरण्यकशिपु शब्द करने वाले की इधर–उधर खोज कर रहा था, उसी समय खंभे के भीतर से निकलते हुए उस अद्भुत प्राणी को उसने देखा। वह सोचने लगा–अहो, यह न तो मनुष्य है और न पशु, फिर यह नृसिंह के रूप में कौन सा अलौकिक जीव है।

जिस समय हिरण्यकशिपु इस उधेड़ बुन में लगा हुआ था, उसी समय उसके बिलकुल सामने ही नृसिंह भगवान खड़े हो गये। भक्त के प्रेमवश भगवान स्वयं अवतरित हो जाते हैं। जिसकी ईश्वर में अटूट निष्ठा होती है उसकी सदैव ईश्वर रक्षा करता है। हिरण्यकशिपु के पाप का अन्त करने के लिये भगवान ने विकराल रूप धारण किया और उसका अन्त करके प्रह्लाद की रक्षा की। इस प्रकार ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है। जिस भाव से भक्त उनको पुकारता है उसी भाव से वह तत्काल उपस्थित हो जाते हैं।